समीक्षा

2008–2009

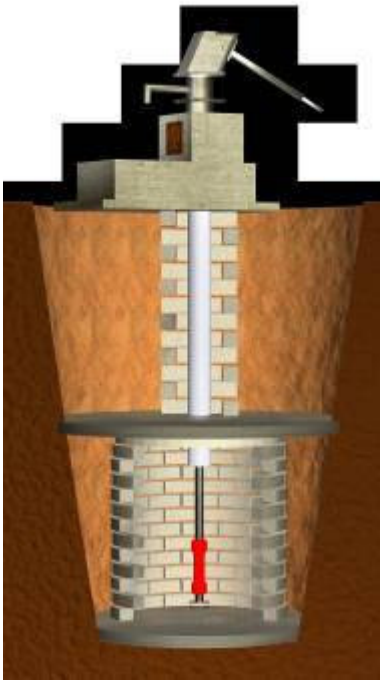

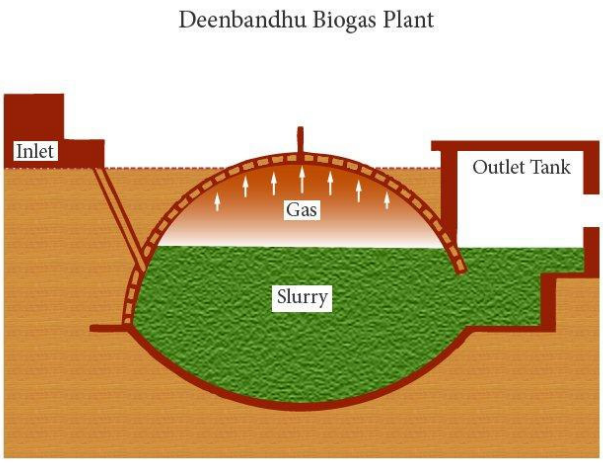

कुमाऊँ कारीगर समिति

ग्राम – कालिका ,पोस्ट आफिस –कालिका , रानीखेत, जिला अल्मोड़ा, पिन –263 645
उत्तराखण्ड ,फोन न. : 05966 – 221516, 222298

परिचय

कुमाऊँ कारीगर समिति ग्रामीण नवयुवकों का एक संगठन है। इसका पंजीकरण 6 अक्टूबर 2001 में सोसाइटी रजिस्ट्रेशन एक्ट 1860 ए के अर्न्तगत किया गया हैं।

सामुदायिक विकास कार्यक्रमों में वैकल्पिक तकनीकि का महत्वर्पूण स्थान हैं। परन्तु प्रशिक्षित एंव कुशल कारीगरों की अवयवस्था से उचित क्रियान्वयन न होने के कारण इसका लाभ ग्रामीण समुदायों तक नही पहुँच पाता हैं। इस सोच को मददेनजर रखते हुये कुशल कारीगरों की एक समिति का गठन करने का प्रयास **पान हिमालयन ग्रासरूटस डेवलपमेंट फाउन्डेशन** द्वारा किया गया, इस प्रयास के फलस्वरूप **कुमाऊँ कारीगर समिति** का गठन हुआ।

वर्तमान में कुमाऊँ कारीगर समिति एक स्वावलम्बी स्वैच्छिक समिति के रूप में ग्रामीण समुदाय के साथ मिलकर ग्रामीण विकास कार्यक्रमों को क्रियान्वयन कर रही हैं। समिति का कार्यक्षेत्र सम्पूर्ण उत्तराखण्ड राज्य है ।

समिति का मुख्य कार्यालय ग्राम कालिका, जिला अल्मोड़ा में स्थित हैं। तथा अपने कार्यक्रमों के उचित संचालन एवं समन्वयन हेतु तीन अन्य क्षेत्रीय कार्यालय गरूड़, सुनोली एवं डौड़ाखाल में स्थापित किये है। इन क्षेत्रीय कार्यालयों द्वारा समुदाय के माध्यम व समन्वय से उपयुक्त तकनीकि का प्रचार-प्रसार विभिन्न कार्यक्रमों में आवश्यकतानुसार संचालन किया जा रहा है।

लक्ष्य

समुदाय की आवश्यकताओं एव सहभागिता के आधार पर उपयुक्त तकनीकि के माध्यम से प्राकृतिक संसाधनों का सदुपयोग एवं प्रबन्धन कर उनके जीवन स्तर में गुणात्मक सुधार लाना।

उद्देश्य

- समुदाय आधारित संगठनों, पंचायतों एवं स्वयं सहायता समूहों को प्राकृतिक संसाधनों के प्रबन्धन हेतु क्षमता विकास कर, उनकी कार्ययोजना के आधार पर कार्यक्रमों को संचालित करने हेतु प्रेरित करना।
- पारम्परिक जल स्रोतो का संरक्षण करने हेतु ग्रामीण समुदायों को प्रेरित करना।
- पेयजल की समस्या के समाधान के लिए उपयुक्त तकनीकी के कार्यक्रम को अपनाना।
- जल स्रोतों को दूषित होने से बचाने के लिए पर्यावरणीय स्वच्छता के अन्तर्गत शौचालय निर्माण करने हेतु समुदाय को प्रेरित करना।
- बायोगैस निर्माण के प्रचार से ग्रामीण समुदाय को वैकल्पिक उर्जा का साधन उपलब्ध कर जंगलों पर बढ़ते दबाव को कम करना, एंव जलवायु परिर्वतन/गलोबल वार्मीग में मिथेन गैस के प्रभाव को कम करना।

- जल स्रोतों पर बढ़ते दबाव को कम करने के लिए बरसाती पानी संग्रहण टैंक की तकनीकि से समुदाय को प्रेरित करना।
- जंगलों के अनुचित दोहन एवं प्रबन्धन से पर्यावरण एवं जीवन स्तर पर पड़ रहें दुष्प्रभावों के प्रति लोगो को जागरूक करके गधेरा बचाओं अभियान का संचालन कर जैव विविधता संरक्षण कार्यक्रमों को क्रियान्वयन करना ।
- उत्तराखण्ड के पर्वतीय ग्रामीण क्षेत्रों में कारीगरी/दस्तकारी के माध्यम से स्थानीय नवयुवकों के कौशल में वृद्धि कर स्वरोजगार के अवसर प्रदान करना।
- उपयुक्त तकनीकी के प्रचार प्रसार से सरकारी नीतियों में बदलाव लाने हेतु प्रयास करना।

गधेरा बचाओ अभियान

प्राकृतिक संसाधनों का सामूहिक प्रबंधन उत्तराखण्ड के ग्रामीण जीवन की विशिष्ट पहचान रही है। वर्तमान में जल ,जंगल ,जानवर एवं जमीन के संकुचन से पर्वतीय समुदाय के जीवन शैली एवं आजीविका के स्तर में निरन्तर बदलाव हो रहा हैं। ऐसी स्थिति में सुधार की अपेक्षा तब तक सम्भव नही हैं जब तक कि प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण एवं संवर्धन कर उनके तीव्र ह्रास पर अंकुश न लगाया जाये।

पर्वतीय क्षेत्रों में प्राकृतिक संसाधनों का समुदाय के जीवन चक्र से अर्न्तसम्बन्ध को मद्देनजर रखते हुए, अल्मोड़ा जनपद के गगास नदी के जलागम क्षेत्र में गधेरा बचाओ अभियान की शुरूआत पीछले चार वर्षो से की जा रही है। जिसका मुख्य उद्देश्य सभी गधेरों में गिरते जल स्तर के प्रतिकूल प्रभावों को, समुदाय की सहभागिता से प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण एवं सर्वधन कर, भविष्य में उनकी आजीविका एवं खाद्य् सुरक्षा में सकारात्मक सुधार करना है। इस घाटी का क्षेत्रफल 500 वर्ग कि0मी0 है जिसमे 373 गॉवों के 23,000 परिवारो की 1,06,500 जनसंख्या रहती है, सम्पूर्ण गगास जलागम में 14 छोटे बड़े मुख्य गधेरे हैं। समीक्षा वर्ष के दौरान इनमे से **दुसाद,कनाड़ी,खीरो,पनाई एंव मालेगाड़** गधेरों में इस अभियान का विस्तृत रूप से संचालन किया गया। इस अभियान के क्रियान्वयन करने का दायित्व समुदाय द्वारा त्रिस्तरीय ढ़ाचे (स्वंय सहायता समूह, गधेरा बचाओ समिति, गधेरा बचाओ मंच) के आधार पर किया जा रहा है, जिसका विवरण निम्नवत है :

क्रम सं	गतिविधियॉ	2006–07	2007–08	2008–09	कुल
1	सर्म्पक गॉव की संख्या	–	50	10	60
2	स्वंय सहायता समूह गठन	24	50	01	75
3	गधेरा बचाओ समिति	11	14	–	26
4	गधेरा बचाओ मंच	01	1	01	02
5	ग्राम कोष	1,60,000	2,59,730	2,37,184	6,56,914

गधेरा बचाओ अभियान को सार्थक, व्यापक एंव निरन्तरता बनाये रखने के लिए, सूखते जल स्रोतों,नौलों,धारों ,गधेरो एंव नदियों को पूर्नजीवित करने के लिए इस वर्ष भी जल दिवस

का आयोजन किया गया, जिसमे लगभग 600 लोगो ने प्रतिभाग किया। इस कार्यक्रम के संचालन में दुसाद गधेरा बचाओ मंच की भूमिका सराहनीय रही।

- **प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण एवं संवर्धन कार्यक्रम**

कुमाऊँ कारीगर समिति द्वारा गगास जलागम क्षेत्र के 5 गधेरों के लगभग 60 गांवों में वृहद रूप से समाकेतिक ग्रामीण विकास कार्यक्रम का संचालन किया जा रहा हैं। इन सभी गधेरों में जल की विकट समस्या को मद्देनजर रखते हुए जलस्रोत संरक्षण एवं संवर्धन कार्य का संचालन किया जा रहा हैं। इस कार्यक्रम के सफल संचालन के लिए 15 ग्रामीण पौधशालाओं की स्थापना स्वंय सहायता समूह एंव व्यक्तिगत कास्तकारों द्वारा की गई। पौधशालाओं में स्थानीय मॉग के आधार पर चौड़ी पत्ती के लगभग 25 प्रजातियों के 2,00,000 पौधे तैयार किये गये।

समीक्षा वर्ष के दौरान 15 गधेरा बचाओ समितियों द्वारा माईक्रोप्लान के आधार पर स्थानीय लोगों की सहभागिता से मानसून के दौरान गॉव की सामूहिक भूमि पर चौड़ी पत्ती के 75,078 चारा, घास एंव झाड़ी प्रजाति के पौधों का रोपण लगभग 310 हैक्टेयर में किया गया एंव व्यक्तिगत भूमि में इन्हीं प्रजातियों के 8,962 पौधों का रोपण किया गया। इसके साथ-साथ शीतकालीन वृक्षारोपण में दुसाद गधेरे के दोनो छोरो पर 1352 उत्तीस के पौधों एंव 1032 अखरोट के पौधों का रोपण सामुदायिक भूमि पर किया गया। इस प्रकार समीझा वर्ष के दौरान समस्त गॉव की सहभागिता से मानसून एंव शीतकाल में कुल मिलाकर 86,424 पौधों का रोपण किया गया। 171 किग्रा0 (10,000 बीज) पांगर एंव 4 किग्रा0 (1,500 बीज) बांज का सीधे बीज रोपण किया गया। मृदा संरक्षण एवं जल संवर्धन के लिए 50 नये खालों का तथा 40 चैकवाल एंव 9 चैकडैम का भी निर्माण किया गया ।

सामुदायिक वन प्रबन्धन कार्यक्रम के अर्न्तगत समुदायिक वन भूमि से घास का उत्पादन भी निरन्तर बढ़ रहा है, इससे जानवरों के लिए चारे की पर्याप्त पूर्ति हो रही है। कुछ गॉव जैसे कि मल्ला एंव तल्ला सतीनौगॉव में अधिक घास का उत्पादन होने से समुदाय द्वारा पूर्ण रूप से उपयोग नहीं किया जा सका। समीक्षा वर्ष के दौरान दुसाद के 12 गॉव की सामुहिक भूमि से 6,196 गटठा (30 किलो लगभग प्रति गटठा) घास का उत्पादन प्राप्त हुआ। इस घास उत्पादन के वितरण की प्रणाली सभी की सहभागिता को मद्देनजर रखते हुये बनाई गई।

दुसाद गधेरे के समुदाय द्वारा पीछले चार वर्षो से गधेरा बचाओ अभियान के अर्न्तगत वन विभाग से निरन्तर सर्म्पक किया जा रहा था। वन विभाग ने भी गिरते हुये जल स्रोत की समस्या एंव लोगो की जागरूकता को समझते हुये, दो बार उखखलेख क्षेत्र का उच्च अधिकरियों के साथ इस समस्या के विचार विर्मश के लिए सयुक्त रूप से भ्रमण किया, एंव वन विभाग को यह समझाने का प्रयास किया कि यदि उखखलेख क्षेत्र के पुराने चाल–खाल को पुनर्जिवित नहीं किया जायेगा तो इस गधेरे से 11 गांवों मे जो जल की आपूर्ति हो रही है उनकी पेयजल की उपलब्धता विकट होती जायेगी। इसको मद्देनजर रख कर वन विभाग ने अपने संसाधनो से जल संवर्धन के लिए खाल–चाल एंव चैकडेम निर्माण की योजना समुदाय के साथ बनाई, एंव उनका क्रियान्वयन भी सम्बन्धित गांवों के साथ मिलकर किया गया। इस दौरान 300 खालों को पुनर्जिवित किया गया और लगभग इतने ही चैकवाल, गलीप्लगिंग आदि का निर्माण किया गया, जो आने वाले समय में अन्य गधेरों के समुदाय के लिए एक प्रेरणा है।

गगास जलागम क्षेत्र में वैज्ञानिक विधि द्वारा समुदाय को जाग्रत करने के लिये समुदाय द्वारा ही वर्षा, तापमान, वाष्पीकरण, एंव गधेरों में जल स्राव मापन करने की प्रक्रिया 9 स्थानों पर निरन्तर चलायी जा रही है। इससे यह गणना की जा रही है कि पुरे जलागम क्षेत्र में कुल हुई वर्षा में से कितना पानी बहा एंव कितना पानी भूमि के अन्दर गया। इससे भविष्य में जमीनी जल स्तर का आकंलन किया जा सकता है।पॉच नौलों एंव एक धारा के जल समेट क्षेत्र में किये गये जल संवर्धन के कार्यो के प्रभाव का मापन भी किया जा रहा है,यदि इसके परिणाम सकारात्मक रहे तो समुदाय को इसे प्रेरित करने में मदद मिल सकती है। इस दौरान निम्न तरह के औसत आकड़े प्राप्त हुये।

क्रम सं0	कार्यक्रम	प्राप्त औसत आकड़े (एक वर्ष में)
1	वर्षा मापन	616 M.M.
2	वाष्पीकरण	113 M.M.
3	जल स्राव	20,170 LPM
4	तपमान	अधि0 23 ˚C न्यू0 14 ˚C
5	कुल वर्षा दिन	73
6	कुल सूखे दिन	292

उपरोक्त सभी गतिविधियों के संचालन में गधेरा बचाओ समितियों का विशेष योगदान रहा है, समितियों द्वारा अपने गॉव में बैठकों का आयोजन कर आपसी सामंजस्य से पारदर्शिता पूर्वक निर्णय लिये गये एवं प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग में समानता जैसे मुददों पर विशेष ध्यान दिया गया। सामुदायिक कार्य हेतु समुदाय द्वारा लागत का 20 प्रतिशत अंशदान के रूप में योगदान किया गया।

आजीविका एंव खाद्य सुरक्षा

समीक्षा वर्ष के दौरान आजीविका एंव खाद्य सुरक्षा के पहलूओं को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न आय वृद्वन के कार्यक्रम का संचालन ग्रासरूटस एंव महिला उमंग समिति के सहयोग से करने का प्रयास किया। जिसका विवरण निमन्वत है :

- **फलदार पौधों का वृक्षारोपण**

समुदाय की आयवृद्वि में फलदार पेड़ों की भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती है, इस उददेश्य के अनुसार कनाड़ी व दुसाद गधेरे में स्थापित पौधशालाओं में फलदार पौधों को तैयार कर 6,957 पौध का रोपण किया गया। जिसमे मुख्य रूप से अखरोट, पहाड़ी नीबू, कागजी नीबू,माल्टा, संतरा आदि प्रजाति के पौधे थे। इसके अतिरिक्त समीझा वर्ष के दौरान स्टोबरी के 2,597 पौधे एंव ऐलोवेरा के 592 पौधों को कास्तकार को उपलब्ध कराया गया साथ ही 30 कास्तकारों द्वारा 10 केजी केमोमाईल चाय का उत्पादन किया गया।

- **फलदार पौधों की कलम लगाना**
  दुसाद एंव पनाई क्षेत्र में कास्तकारों को फलो में अधिक उत्पादन एंव उच्च गुणवत्ता प्राप्त करने के लिए अखरोट के 426 बीजू पौधों में उन्नत किसम की कलम लगाई गई, ताकि भविष्य में इसका अधिक लाभ मिल सके।

- **वर्मी कम्पोस्ट से जैविक खाद तैयार करना**

  मिटटी की उपजाऊ शाक्ति को बढाने के लिए पूर्व वर्ष में केचुएं से खाद तैयार करने की विधि की जानकारी दी गई थी, समीझा वर्ष के दौरान 300 कास्तकारों के घरों में सर्वेक्षण किया गया, जिसमे से 150 घरों द्वारा अपने पारम्परिक गोबर के ढेर में ही डाला गया है, अर्थात इसे लोगों द्वारा अपनाया जा रहा है।

पेयजल

पर्वतीय क्षेत्रों में वनों के दोहन एवं अनुचित प्रबन्धन से पारम्परिक जल स्रोत, नौलों एंव धारों के सूख जाने से ग्रामीण समुदायों की पेयजल की समस्या दिन प्रतिदिन विकट होती जा रही हैं। इस समस्या को कम करने के लिए कुमाऊँ कारीगर समिति द्वारा रिसावदार कुएँ/हैन्डपम्प का निर्माण एक विकल्प के रूप में किया जा रहा है। इस वित्तीय वर्ष में कुमाऊँ एवं गढ़वाल के विभिन्न ग्रामीण क्षेत्रों में 50 रिसावदार कुऑ/हैण्डपम्पों का निर्माण उत्तराखण्ड जल संस्थान के सहयोग से किया गया।

इन रिसावदार कुओं के निर्माण से 1050 परिवारों की लगभग **5,720** जनसंख्या को पीने के लिए स्वच्छ जल प्राप्त हुआ। इस कार्यक्रम के द्वारा ग्रामीण महिलाओं का पानी लाने पर लगने वाले समय की बचत के साथ–साथ स्वच्छ पानी की उपलब्धता में भी वृद्धि हुई हैं, जिससे परिवार के स्वास्थ पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

भविष्य में हैन्डपम्पों के रख–रखाव हेतु प्रशिक्षण पर्यावरण स्वच्छता एंव स्वास्थ सम्बन्धित जागरूकता कार्यक्रम भी चलाये गये तथा इनका जल स्तर बनाये रखने के लिए जल संवर्धन एंव सरंक्षण के कार्यो की भी लाभार्थीयों को जानकारी दी गई।

समीझा वर्ष के दौरान कुमाऊँ कारीगर समिति एंव ग्रासरूटस संस्था के पिछले 7–8 साल के अनुभव व सरकारी विभागों के साथ सामंजस्य बनाने के फलस्वरूप उनका ध्यान कुमाऊँ कारीगर समिति द्वारा किये जा रहे कार्यो की ओर आकर्षित हुआ। जोकि कुमाऊँ कारीगर समिति के लिए बढ़ी उपल्बिध के साथ–साथ एक चुनौती भी है। यह कुमाऊँ कारीगर समिति के उददेश्य के अनुसार उसके भविष्य के लिए काफी अच्छी पहल है, इससे समिति आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ सकेगी। समीझा वर्ष के दौरान उत्तराखण्ड जल संस्थान द्वारा इस कार्यक्रम को अपने अन्य कार्यक्रमो की तरह शामिल कर लिया गया है। और कुमाऊँ कारीगर समिति के साथ एक अनुबन्ध भी किया जा चुका है। यह कार्यक्रम भविष्य में निरन्तर आगे चलता रहेगा, जो समिति के स्वालम्बन के लिए आज तक की सबसे बड़ी उपलब्धि है। इस कार्यक्रम को निम्नानुसार क्रियान्वयन किया जा रहा है।

गढ़वाल मण्डल						
क्रम सं0	जिले	डिविजन	विकास खण्ड	सर्वेक्षण ग्राम की संख्या	संभावित ग्राम	कार्य पूर्ण ग्राम
1	टिहरी	टिहरी	2	38	25	10
2	पौड़ी	पौड़ी	2	15	09	07
3	रूद्रप्रयाग	रूद्रप्रयाग	2	16	14	07
		कुल	**06**	**69**	**48**	**24**
कुमाऊँ मण्डल						
1	अल्मोड़ा	अल्मोड़ा	2	8	7	5
2	अल्मोड़ा	रानीखेत	2	11	10	4
3	नैनीताल	नैनीताल	3	30	20	6
4	नैनीताल	रामनगर	1	12	10	6
5	बागेश्वर	बागेश्वर	1	1	1	1
6	पिथौरागढ़	पिथौरागढ़	1	6	4	2
7	पिथौरागढ़	डीडीहाट	1	4	3	2
		कुल	**11**	**72**	**55**	**26**
		महायोग	**17**	**141**	**103**	**50**

बरसाती जल संग्रहण टैंक

समीझा वर्ष में 05 व्यक्तिगत बरसाती जल संग्रहण टैंकों का निर्माण किया गया। प्रति टैंक की कुल लागत रू. 18,000 से 22,000 तक है तथा इस लागत का 55 प्रतिशत लाभार्थीयों का स्वंय अंशदान रहता है।

जल गुणवत्ता जॉच कार्यक्रम

विगत वर्षो की भांति समीक्षा वर्ष के दौरान भी जल गुणवत्ता जाँच का कार्य जारी रहा। चूँकि संस्था मुख्य रूप से जल संवर्धन, पेयजल एवं स्वच्छता का कार्य कर रही हैं एतएंव अपने कार्यक्षेत्र के जल स्रोतो एवं रिसावदार कूओं का प्रतिवर्ष दो बार जल गुणवत्ता जाँच कार्य किया जा रहा हैं। इस वित्तीय वर्ष में 84 गांवों के 193 स्रोतों के 197 नमूनों के जल गुणवत्ता की जाँच की गयी , तत्पश्चात सम्बन्धित समुदाय को इसके परिणाम के बारे में अवगत कराया गया। दूषित जल के निवारण के लिए समुदाय को बैठको के माध्यम से जागरूक किया गया।

उत्तराखण्ड सरकार द्वारा संचालित **राष्ट्रीय ग्रामीण पेयजल गुणवत्ता अनुश्रवण एंव निगरानी कार्यक्रम** के अर्न्तगत डी0पी0एम0यू0, अल्मोड़ा के सहयोग से, जल का महत्व, संरक्षण, दूषित जल से होने वाली बिमारियॉ एंव उनकी रोकथाम,तथा जल गुणवत्ता जॉच के प्रशिक्षण के लिए विकास खण्ड द्वाराहाट की 67 ग्राम पंचायतों में अलग–अलग दो दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया, जिसमे 368 प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण लिया एंव लगभग 443 जल स्रोतो के 268 नमूनों की जॉच करने का प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण के दौरान जल गुणवत्ता जॉच की फील्ड किट भी वितरित किये गये।

पर्यावरणीय स्वच्छता

पेयजल की गुणवत्ता एवं पर्यावरणीय स्वच्छता को बनाये रखने के लिए ग्रामीण समुदायों को शौचालय निर्माण हेतु प्रेरित किया जा रहा हैं। शौचालय निर्माण की मांग दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही हैं। इसी क्रम में कुमाँऊ कारीगर समिति के कुशल कारीगरों द्वारा गॉवों में प्रशिक्षण कार्यक्रम चला कर समुदाय को दो गढ्ढों के सोख्ता पिट वाले जलबन्द शौचालयों का निर्माण करने हेतु प्रोत्साहित किया जा रहा हैं। प्रति शौचालय की कुल लागत लगभग रूपया 10,000 तक हैं एवं इस लागत का 75 प्रतिशत लाभार्थी का अंशदान रहता हैं।इस समीक्षा वर्ष के दौरान समिति ने 104 शौचालयों का निर्माण किया गया।

निर्मल गधेरा घोषित अभियान : दुसाद गधेरा बचाओ मंच द्वारा 08–09 में सम्पूर्ण गधेरा को निर्मल गधेरा बनाने का प्रयास निरन्तर किया जा रहा है, अभी भी इसमे 850 घरों में से लगभग 80 परिवारों को शौचालय व्यवस्था से दुसाद गधेरा बचाओ मंच के माध्यम से जोड़ा जाना है। सभी छूटे हुये परिवारों की आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर होने से मंच के माध्यम से गधेरा बचाओ समितियॉ अपने–अपने गांव में सहयोग देकर इनके निर्माण के लिए वचनबद्ध है।

वैकल्पिक ऊर्जा

ग्रामीण समुदायों के लिए ईधन हेतु लकडी एंव अन्य संसाधन की उपलब्धता एक समस्या का रूप धारण कर चुकी हैं। जंगलों के संकुचन के कारण महिलाओं और बच्चों को लकड़ी लाने के लिए काफी दूर तक जाना पड़ता हैं, जिससे उनका कार्यभार सोचनीय स्तर पर पहुँच गया हैं ।

दूसरी ओर ईधन हेतु अन्य विकल्पों के कमी से जंगलो पर दबाव भी बढ़ता जा रहा हैं और इस समस्या को मद्देनजर रखते कुमाँऊ कारीगर समिति ने बायोगैस को एक वैकल्पिक उर्जा के रूप में उपयोगी पाया हैं। इस विकल्प से महिलाओं के कार्य बोझ में कमी के साथ-साथ धुएं से होने वाली बीमरियों में भी अंकुश लगा है।

समीक्षा वर्ष में ईधन की समस्या के समाधान हेतु 61 बायोगैस संयंत्रो का निर्माण कुमाऊँ कारीगर समिति के कुशल कारीगरों द्वारा किया गया। प्रति बायोगैस की कुल लागत रू. 16,000 है, जिसमे से लाभार्थी परिवार का अंशदान 60 प्रतिशत है तथा लागत का 40 प्रतिशत उत्तराखण्ड सरकार एवं समिति द्वारा अनुदान दिया जा रहा है। बायोगैस संयत्र के रख–रखाव हेतु कुमाँऊ कारीगर समिति एंव सहयोगी संस्थाओं के कार्यक्षेत्र में समय-समय पर कार्यशाला आयोजित की गई है।

पर्यावरण की द्वष्टि से पुरे विश्व में आज जो ग्लोबल वार्मिग (जलवायु परिर्वतन) की चिन्ता हर मंच में उठाई जा रही है, इस परिर्वतन में मिथेन गैस सबसे अधिक मात्रा में होना एक खतरा बनते जा रहा है। बायोगैस में इसी गैस को ईधन के रूप मे प्रयोग किया जाता है। यदि इस कार्यक्रम को बढ़वा मिलता है तो यह छोटा सा कदम इस ग्लोबल वार्मिग के एक कारक को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेगा। इस समस्या को मददेनजर रखते हुये कुमाऊँ कारीगर समिति भविष्य में भी इस कार्यक्रम को बृहद रूप में फैलाने का प्रयास करती रहेगी।

वर्ष के दौरान वैकल्पिक तकनीकि से लाभान्वित समुदाय/परिवार

क्रम सं.	जिला	ब्लाक	रिसावदार कुऑ	बायोगैस	शौचालय	बरसाती टैंक
1	अल्मोड़ा	द्वाराहाट		2	89	5
		ताड़ीखेत	1		8	
		भिक्यासैण		3		
		भैंसियाछाना	1			
		स्यालदे	3			
		धौलादेवी	4			
		चौखुटिया				
		सल्ट	6		7	
2	नैनीताल	रामगढ़	2	1		
		भीमताल		4		
		बेतालघाट	2			
		धारी	2			
		ओखकाण्डा		5		
		रामनगर		33		
3	बागेश्वर	गरूड़	1	3		
		कपकोट		2		
4	पिथौरागढ़	मुनाकोट		1		
		बिण		4		
		गंगोलीहाट	2			
		डीडीहाट	2			
5	टिहरी गढ़वाल	चम्बा	3			
		नरेन्द्र नगर	7			
6	चमोली	देवाल		2		
7	पौड़ी	वीरोखाल	1			
		कलजीखाल	1			
		पखोडा	1			
		कोट	2			
		पौड़ी	2			
8	रूद्रप्रयाग	जखोली	7			
9	देहरादून	विकासनगर		1		
	जिले 9	**ब्लाक– 30**	**50**	**61**	**104**	**05**

सहयोगी सस्थाओं द्वारा उपयुक्त तकनीकि का प्रचार एवं प्रसार

कुमाऊँ कारीगर समिति द्वारा उपयुक्त तकनीकी का प्रचार ,प्रसार एवं रख रखाव हेतु कुमाऊँ एवं गढ़वाल में 15 सहयोगी संस्थाओं के साथ मिलकर पिछले चार वर्षो से वैकल्पिक तकनीक के कार्यक्रम चलाये जा चुके हैं। समीक्षा वर्ष के दौरान कुमाऊँ कारीगर समिति द्वारा इनके रख–रखाव पर ज्यादा ध्यान दिया गया है। विशेषकर बायोगैस संयत्र को क्रियाशील रखना एक चुनौती भरा कार्य है। अपने वरिष्ठ कारीगरों को सहयोगी संस्थाओं में भेजकर लाभर्थीयों का यूजर कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमे लगभग 150 घरों में जाकर गोबर गैस के रख–रखाव के सर्वेक्षण का कार्य किया गया। सर्वेक्षण में लगभग 95 प्रतिशत संयत्र पूर्णतः क्रियाशील थे।

डब्लू0डब्लू0 एफ0 (व्लर्ड वाईड फंड)

समीझा वर्ष के दौरान ग्रासरूटस संस्था के सहयोग से डब्लू0डब्लू0 एफ0 संस्था, रामनगर, नैनीताल जो कोटाबाग एंव रामनगर जंगल के नजदीक बसे गांवों में वन्य जीव से खतरा कम करने एंव संरक्षण के लिए कार्यरत है, के साथ गोबर गैस संचालन हेतु अनुबन्ध किया गया है। प्रथम चरण में 40 बायोगैस प्रस्तावित किये गये थे, जिसमे से 33 गोबर गैस संयत्रों का निर्माण पूर्ण कराया गया। 31 गोबर गैस संयत्रों का निर्माण एक ही गांव मनकन्ठपुर में किया गया।इनके रख'–रखाव के लिए गोबर गैस यूजर कार्यशाला का भी आयोजन किया गया। इन क्षेत्रों में बायोगैस संयत्रों की उपयोगिता को देखते हुये भविष्य में भी इस संस्था के साथ गोबर गैस कार्यक्रम के संचालन की संभावना है।

क्षमता विकास कार्यक्रम

ग्रामीण नवयुवको को वैकल्पिक तकनीकि में प्रशिक्षण देकर उन्हें एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में तैयार करना कुमाऊँ कारीगर समिति का एक मुख्य उउेश्य हैं, जिसके फलस्वरूप वर्तमान में 50 कारीगरों का यह समूह कार्यरत है। यह समूह विभिन्न हुनर के आधार पर एक कारीगरी श्रेणी के रूप में गठित है। कुमाऊँ कारीगर समिति में बहुत से कारीगर है जिन्होने अपनी जिन्दगी की शुरूआत एक प्रशिक्षणार्थी के रूप में की थी , आज उनके पास हाथ का एक हुनर है जिससे वे अपनी अच्छी आजीविका चला रहें है, सभी कारीगर निम्न टीमो के आधार पर कार्य कर रहे हैः

पेयजल एंव पर्यावरणीय स्वच्छता	–	24
वैकल्पिक उर्जा	–	17
बरसाती जल संग्रहण	–	07
जल गुणवत्ता जॉच	–	02
प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण एंव सर्वधन	–	06

इसी क्रम में समय–समय पर क्षमता विकास हेतु प्रशिक्षण शिविरों का भी आयोजन किया गया जिनमें समिति के सभी सदस्यों ने भाग लेकर काफी अच्छे अनुभव प्राप्त किये। समीक्षा वर्ष के दौरान

प्रशिक्षण कार्यक्रमों की तालिका निम्नवत है :

दिनॉक	विषय	स्थान / आयोजक	प्रतिभागी सं0
05 अप्रैल 2008	रिसावदार कुऑ तकनीकि प्रचार प्रसार	जल संस्थान, नैनीताल	02
28 मई 2008	गोबर गैस कार्यक्रम	के0वी0आई0सी0 / बायोफयूल बोर्ड ,देहरादून	1
08 जुलाई 15 अगस्त 08	वैकल्पिक तकनीकि के आदान–प्रदान हेतु	एम0आई0टी0 , अमेरिका	1
21 अगस्त 08	बायोगैस तकनीकि की जानकारी हेतु शौक्षिक भ्रमण (डब्लू0डब्लू0 एफ0, रामनगर, नैनीताल)	दुसाद , कालिका	12
15 सितम्बर 08	भविष्य के कार्यक्रम संचालन हेतु कार्यशाला	ग्रासरूटस एंव कुमाऊँ कारीगर समिति	25
25 सितम्बर 08	वर्षिक आम बैठक / कार्यशाला	ग्रासरूटस एंव कुमाऊँ कारीगर समिति	20
06 अक्टूबर 2008	रिसावदार कुऑ तकनीकि प्रचार प्रसार हेतु पेयजल मंत्री, उत्तराखण्ड सरकार	नैनीताल कल्ब , जल संस्थान, नैनीताल	03
05–12 दिसम्बर 08	गोबर गैस यूजर कार्यशाला	हिमाचल प्रदेश	03
10–12 दिसम्बर 08	पेयजल गुणवत्ता जॉच कार्यशाला	पी0एम0यू0 , देहरादून, / एफ0टी0आई0, हल्द्वानी	02
17–22 जनवरी 09	गोबर गैस यूजर कार्यशाला	हिमाचल प्रदेश	03
29–31 जनवरी 09	पेयजल गुणवत्ता जॉच कार्यशाला	ग्रासरूटस, जल संस्थान, विकास खण्ड, जन प्रतिनिधि एंव महिला समूह	30
10–12 फरवरी 09	नदी बचाओ अभियान	देहरादून	06
03–09 मार्च 09	गोबर गैस यूजर कार्यशाला / नाहन गौ–शाला भ्रमण	हिमाचल प्रदेश	06

संस्थागत एवं वित्तीय प्रबन्धन

समीक्षा वर्ष के दौरान कुमाऊँ कारीगर समिति को वैकल्पिक तकनीकि के प्रचार प्रसार , जल संवर्धन कार्यक्रम एवं संस्थागत क्षमता की वृद्धि का अवसर एवं चुनौती – सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट मुम्बई एंव ग्रासरूटस के वित्तीय सहयोग से प्राप्त हुआ।

आभार

समिति वित्तीय संस्था सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट, उत्तराखण्ड शासन, ग्रासरूटस, महिला उमंग समिति, सहयोगी संस्थायें, दुसाद गधेरा बचाओ मंच, गधेरा बचाओ समितियॉ, महिला संगठनों, मित्रों, सभी सदस्यों, आडिटर शारदा एवं बहुगुणा तथा समस्त क्षेत्रीय जनता का आभार प्रकट करती हैं, जिनका अमूल्य सहयोग एवं मार्ग दर्शन हमें निरंतर आगे बढ़ने एवं कार्य करने की प्रेरणा देता हैं।

समिति प्रगति रिपोर्ट एक नजर में

क्रम.स	कार्यक्रम	2008–09	आज तक
1	पेयजल रिसावदार कुएँ • लाभार्थी परिवार • लाभार्थी जनसंख्या	50 1,050 5,720	182 4,124 23,788
2	शौचालय (लाभान्वित परिवार)	105	1562
3	बायोगैस संयंत्र (लाभान्वित परिवार)	61	603
4	बरसाती जल संग्रहण टैंक • लाभान्वित परिवार • लाभान्वित स्कूल	05 –	260 15
5	प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण एवं संवर्धन • वृक्षा रोपण (जंगली प्रजाति) • फलदार पौधरोपण • खाल • कन्टूर ट्रेन्च (मीटर) • पौधशाला • चैकडैम • चैकवाल	86,424 6,957 50 – – 9 40	2,72,791 12,257 487 13,964 – 15 9 40
7	स्वयं सहायता समूह	01	75
8	गधेरा बचाओ समिति	–	26
9	गधेरा बचाओ मंच	1	2
10	सहयोगी संस्थाऐं	01	15

सामुदायिक विकास कार्यक्रमों में किये गये व्यय का विवरण

अ. उपयुक्त तकनीकि कार्यक्रम

क्रम. सं.	कार्यक्रम	खर्च विवरण (रू. लाख में)
1	पेयजल	0.48
2	पर्यावरणीय स्वच्छता	2.53
3	बरसाती जल सग्रहण टैंक	0.49
4	वैकल्पिक उर्जा	0.80
5	प्राकृतिक संसधानो का संरक्षण एंव सर्वधन	23.00
6	जलगुणवत्ता जाँच	0.55
	कुल	**27.85**
ब. प्रशासनिक		
1	मानदेय	1.84
2	कार्यालय किराया टेलीफोन, स्टेशनरी ओडिट डौक्यूमैन्टेशन	0.3 0.3 0.23 0.15
3	यात्रा व्यय	0.75
4	टूल किट	1.00
5	अन्य	0.46
	कुल	**5.03**
	कुल योग (अ+ब)	**32.88**

प्रबन्ध कारिणी समिति

1.	श्री अर्जुन शाह	अध्यक्ष	रानीखेत, अल्मोड़ा
2.	श्री पूरन राम	सचिव	चोपड़ा ,नैनीताल
3.	श्री आन्नद सिंह	कोषाध्यक्ष	चोपड़ा , नैनीताल
4.	कर्नल वी. पी. सिंह	सदस्य	कालिका ,अल्मोड़ा
5.	श्री कल्याण पाल	सदस्य	कालिका, अल्मोड़ा
6.	श्रीमती सुनीता कश्यप	सदस्य	कालिका ,अल्मोड़ा
7.	श्री जगदीश भण्डारी	सदस्य	नैनीताल

कुमाऊँ कारीगर समति

आजीवन सदस्य

क्रम. सं	सदस्यों के नाम	गॉव	जिला
1	पूरन राम	चोपड़ा	नैनीताल
2	जीवन सिंह	चोपड़ा	"
3	मोहन राम	चोपड़ा	"
4	किशन चन्द्र	चोपड़ा	"
5	नन्द किशोर	चोपड़ा	"
6	बची राम	चोपड़ा	"
7	गोपाल राम – 1	चोपड़ा	"
8	विनोद कुमार	चोपड़ा	"
9	धन सिंह	चोपड़ा	"
10	कैलाश चन्द्र	चोपड़ा	"
11	प्रकाश चन्द्र	चोपड़ा	"
12	मोहन चन्द्र	चोपड़ा	
13	गोपाल राम – 2	सिरसा	"
14	विजय सिंह	सिरसा	"
15	सुरेश लाल	सिरसा	"
16	चन्द्रन राम – 2	सिरसा	"
17	रमेश चन्द्र	सिरसा	"
18	रमेश चन्द्र दानी	सिरसा	"
19	मोहन सिंह	कूल	"
20	गोपाल राम – 1	कूल	"
21	पनी राम	कूल	"
22	महेश चन्द्र	कूल	"
23	खीमा नन्द	कूल	"
24	दिनेश चन्द्र	कूल	"
25	जीवन आर्या	कूल	"
26	डिगर राम	कूल	"
27	मोहन सिंह	कूल	"
28	सोबन सिंह	जाजर	"
29	प्रमोद कुमार – 2	छतोला	"
30	जगदीश भण्डारी	नैनीताल	
31	प्रेम बल्लभ	मलौना	अल्मोड़ा

32	महेन्द्र सिंह	मलौना	अल्मोड़ा
33	राजेन्द्र सिंह	"	"
34	चन्द्रन राम – 1	मौना	"
35	जीवन राम	"	"
36	राजेन्द्र कुमार	डोबा	"
37	जगदीश राम	दमतोला	"
38	पान सिंह	"	"
39	विरेन्द्र कुमार	"	"
40	जगदीश चन्द्र	"	"
41	खीम राम	"	"
42	आनन्द राम	"	"
43	खीमा नन्द	"	"
44	चन्दन राम	दमतोला	"
45	किशन सिंह	बनोलिया	"
46	राम सिंह	दुभना	"
47	नवीन चन्द्र	उपराड़ी	"
48	हिम्मत सिंह	मनचौड़ा	"
49	बी0 पी0 सिंह	कालिका	"
50	पान सिंह	एरोड़	"
51	हीरा सिंह	"	"
52	दर्शन सिंह	"	"
53	शंकर राम	गिनाई	"
54	महेन्द्र सिंह	बोहरागॉव	"
55	प्रमोद कुमार – 1	धमाईजर	"
56	पनी राम	पोखरी	"
57	अर्जन शाह	रानीखेत	"
58	कल्याण पौल	कालिका	"
59	सुनीता कश्यप	कालिका	"